SINDHU
www.sindhuchaupal.com
CHAUPAL
हर खबर आप तक

शनिवार 24 फरवरी 2024 | जयप्रकाश बूलचंदानी 9649457589 | website: www.sindhuchaupal.com

मानसरोवर में भगवान झूलेलाल जी के जन्मोत्सव कार्यक्रमों की धूम

चेटीचंड सिंधी मेला समिति जयपुर ग्रेटर ने सुंदरकांड और सामूहिक आरती का किया आयोजन

जयपुर सिंधी समाज अपने इष्ट भगवान श्री झूलेलाल जी के जन्मोत्सव की तैयारी में जोर-जोर से लग गया है। बता दे कि इस बार चेटीचंड सिंधी मेला समिति जयपुर ग्रेटर के लिए महेश हरदासानी जी को अध्यक्ष बनाया गया है। जयपुर सिंधी समाज हर वर्ष अपने ईष्ट भगवान झूलेलाल जी के जन्मोत्सव से पूर्व लगातार कार्यक्रमों का जयपुर शहर में जगह-जगह पर आयोजन करता है इसी कड़ी में मानसरोवर में सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया था सुंदरकांड पाठ के बाद 108 दीपकों से सामूहिक आरती की गई। मानसरोवर के सेक्टर 123 के राधा गोविंद मंदिर में आयोजित 108 सामूहिक श्रीरामचरित मानस के पंचम सोपान सुंदरकांड पाठ में पंडित जगदीश शर्मा के सानिध्य गायक विकास शर्मा एवं लता शर्मा जी की मधुर आवाज में सुंदरकांड के पाठ में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए और हनुमान जी का गुणगान किया। मंदिर में हनुमान जी की महिमा का भजनों के माध्यम से गुणगान हुआ। देर रात तक मंदिर हनुमान जी के जयकारों से गूंजता रहा। सुंदरकांड पाठ के 108 दीपकों से सामूहिक आरती की गई ।श्रद्धालुओं ने मंदिर में श्री हनुमान चालीसा, भगवान श्री राम जी की हनुमान जी की और भगवान श्री झूलेलाल जी की आरती का पाठ किया। सायंकालीन विशेष 108 दीपकों से सामूहिक आरती के उपरांत प्रसाद वितरित किया।

इस अवसर पर महेश हरदासानी ,किशन केसवानी किशु भाई,बाबू भाई पुरसवानी,मोतीराम चाण्डवानी,जयप्रकाश बुलचन्दानी,काली मामा, नरेशकुमार लालवानी, नंदकिशोर नरायाणी,गोविन्द आलवानी, गोविन्द तीर्थानी,सोनू ,परसराम, जगदीश शर्मा, देवकी शर्मा, विशाल सिंह सैकड़ो की संख्या में स्थानीय व्यक्ति उपस्थित रहे।

मानसरोवर में 10 अप्रैल को निकाली जाएगी भव्य शोभा यात्रा

अध्यक्ष महेश हरदासानी ने कहा कि कलियुग में हनुमान जी का स्मरण करने से मनुष्य अपने पापों से मुक्त होते हैं। हनुमान जी का पूजन करने से मनुष्य को सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। हनुमान जी की पूजा करने से श्रीराम का आशीर्वाद भी प्राप्त हो जाता है। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करने से मनुष्य पर कष्ट नहीं आता और हनुमान जी उनके संकट मोचन कर देते हैं।

सिंधी नव वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है तथा इसी दिन को चेटी चंड और भगवान श्री झूलेलाल की जयंती के रूप में मनाया जाता है। आइए जानते हैं

भगवान श्री झूलेलाल जी की आरती

ॐ जय दूलह देवा, साईं जय दूलह देवा।
पूजा कनि था प्रेमी, सिदुक रखी सेवा॥

तुहिंजे दर दे केई, सजण अचनि सवाली।
दान वठन सभु दिलि, सां कोन दिठुभ खाली॥
ॐ जय दूलह देवा।

अंधड़नि खे दिनव, अखडियूँ-दुखियनि खे दारुं।
पाए मन जूं मुरादूं, सेवक कनि थारू॥
ॐ जय दूलह देवा।

फल फूलमेवा सब्जिऊ, पोखनि मंझि पचिन।
तुहिजे महिर मयासा अन्न, बि आपर अपार थियनी॥
ॐ जय दूलह देवा।

ज्योति जगे थी जगु में, लाल तुहिंजी लाली।
अमरलाल अचु मूं वटी, हे विश्व संदा वाली॥
ॐ जय दूलह देवा।

जगु जा जीव सभेई, पाणिअ बिन प्यास।
जेठानंद आनंद कर, पूरन करियो आशा॥

ॐ जय दूलह देवा, साईं जय दूलह देवा।
पूजा कनि था प्रेमी, सिदुक रखी सेवा॥

भारतीय धर्मग्रंथों में कहा गया है कि जब-जब अत्याचार बढ़े हैं, नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है तथा आसुरी प्रवृत्तियां हावी हुई हैं, तब-तब किसी न किसी रूप में ईश्वर ने अवतार लेकर धर्मपरायण प्रजा की रक्षा की। संपूर्ण विश्व में मात्र भारत को ही यह सौभाग्य एवं गौरव प्राप्त रहा है कि यहां का समाज साधु-संतों के बताए मार्ग पर चलता आया है।

ऐसी ही एक कथा भगवान झूलेलालजी के अवतरण की है। शताब्दियों पूर्व सिन्धु प्रदेश में मिर्ख शाह नाम का एक राजा राज करता था। राजा बहुत दंभी तथा असहिष्णु प्रकृति का था। सदैव अपनी प्रजा पर अत्याचार करता था। इस राजा के शासनकाल में सांस्कृतिक और जीवन-मूल्यों का कोई महत्व नहीं था। पूरा सिन्धु प्रदेश राजा के अत्याचारों से त्रस्त था। उन्हें कोई ऐसा मार्ग नहीं मिल रहा था जिससे वे इस क्रूर शासक के अत्याचारों से मुक्ति पा सकें।

लोककथाओं में यह बात लंबे समय से प्रचलित है कि मिर्ख शाह के आतंक ने जब जनता को मानसिक यंत्रणा दी तो जनता ने ईश्वर की शरण ली। सिन्धु नदी के तट पर ईश्वर का स्मरण किया तथा वरुण देव उदेरोलाल ने जलपति के रूप में मत्स्य पर सवार होकर दर्शन दिए। तभी नामवाणी हुई कि अवतार होगा एवं नसरपुर के ठाकुर भाई रतनराय के घर माता देवकी की कोख से उपजा बालक सभी की मनोकामना पूर्ण करेगा।समय ने करवट ली और नसरपुर के ठाकुर रतनराय के घर माता देवकी ने चैत्र शुक्ल 2 संवत् 1007 को बालक को जन्म दिया एवं बालक का नाम उदयचंद रखा गया। इस चमत्कारिक बालक के जन्म का हाल जब मिर्ख शाह को पता चला तो उसने अपना अंत मानकर इस बालक को समाप्त करवाने की योजना बनाई।

बादशाह के सेनापति दल-बल के साथ रतनराय के यहां पहुंचे और बालक के अपहरण का प्रयास किया, लेकिन मिर्ख शाह की फौजी ताकत पंगु हो गई। उन्हें उदेरोलाल सिंहासन पर आसीन दिव्य पुरुष दिखाई दिया। सेनापतियों ने बादशाह को सब हकीकत बयान की।

उदेरोलाल ने किशोर अवस्था में ही अपना चमत्कारी पराक्रम दिखाकर जनता को ढांढस बंधाया और यौवन में प्रवेश करते ही जनता से कहा कि बेखौफ अपना काम करें। उदेरोलाल ने बादशाह को संदेश भेजा कि शांति ही परम सत्य है। इसे चुनौती मान बादशाह ने उदेरोलाल पर आक्रमण कर दिया।

बादशाह का दर्प चूर-चूर हुआ और पराजय झेलकर उदेरोलाल के चरणों में स्थान मांगा। उदेरोलाल ने सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया। इसका असर यह हुआ कि मिर्ख शाह उदयचंद का परम शिष्य बनकर उनके विचारों के प्रचार में जुट गया।

उपासक भगवान झूलेलालजी को उदेरोलाल, घोड़ेवारो, जिन्दपीर, लालसांईं, पल्लेवारो, ज्योतिनवारो, अमरलाल आदि नामों से पूजते हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता के निवासी चैत्र मास के चन्द्रदर्शन के दिन भगवान झूलेलालजी का उत्सव संपूर्ण विश्व में चेटीचंड के त्योहार के रूप में परंपरागत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।चूंकि भगवान झूलेलालजी को जल और ज्योति का अवतार माना गया है, इसलिए काष्ठ का एक मंदिर बनाकर उसमें एक लोटी से जल और ज्योति प्रज्वलित की जाती है और इस मंदिर को श्रद्धालु चेटीचंड के दिन अपने सिर पर उठाकर, जिसे बहिराणा साहब भी कहा जाता है, भगवान वरुणदेव का स्तुति गान करते हैं एवं समाज का परंपरागत नृत्य छेज करते हैं।

यह सर्वधर्म समभाव का प्रतीक है। झूलेलाल उत्सव चेटीचंड, जिसे सिन्धी समाज सिन्धी दिवस के रूप में मनाता चला आ रहा है, पर समाज की विभाजक रेखाएं समाप्त हो जाती हैं।